समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय – 16

अमृत वाणी

भाग – 1

मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

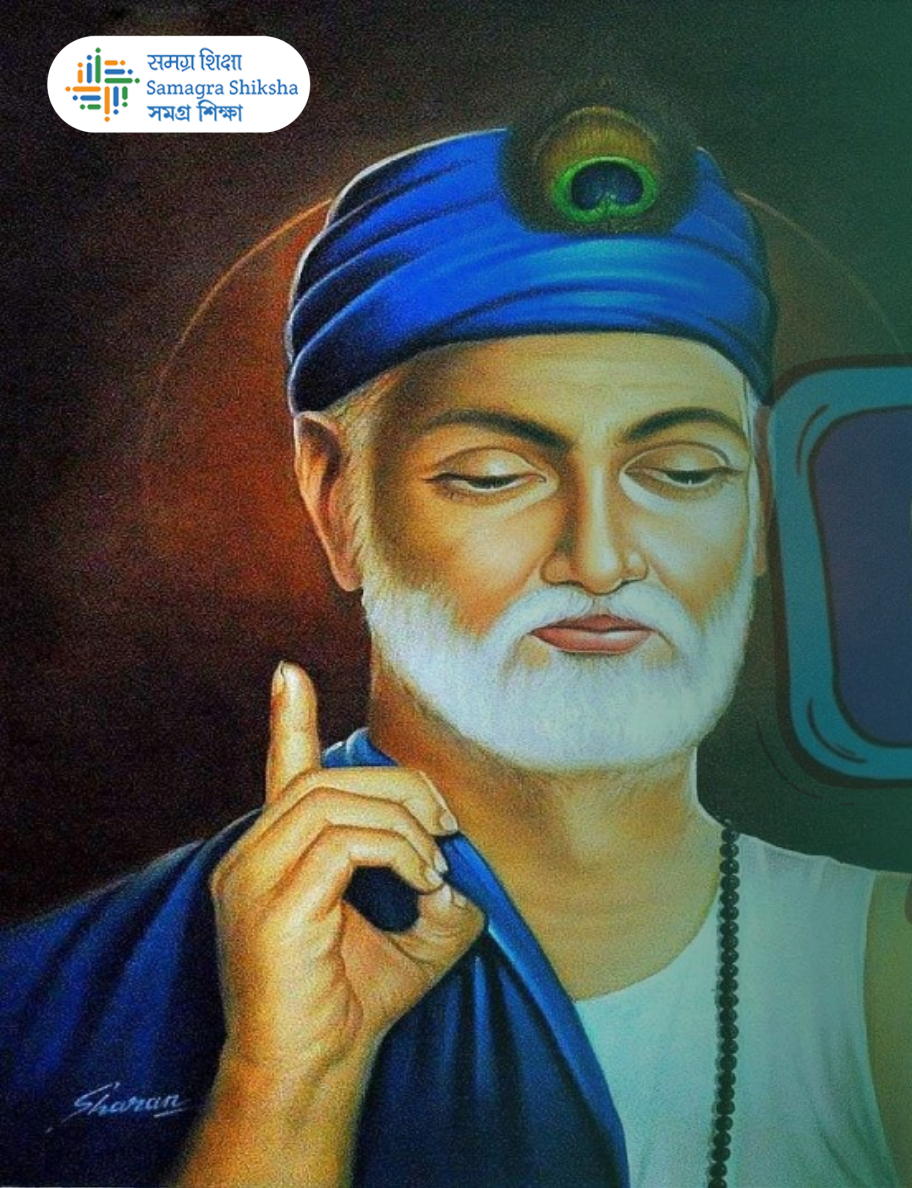

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार है संचरै, सालै सकल सरीर॥1॥

❖ मधुर वचन से रोग ठीक होते हैं, जबकि कटु वचन से मन पर वार होता है। कबीरदास जी कहते हैं कि हमारे द्वारा बोले गए शब्द कान के रास्ते से शरीर में प्रवेश करते हैं और उसे प्रभावित करते हैं।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय॥2॥

❖ मतलब हम बुरा देखने चले थे लोगो के अंदर, बुराई ढूंढने चले थे पर दुनिया में कोई बुरा नही मिला ,और जब अपने दिल में देखा अपने अंदर देखा तो मुझसे बुरा कोई नही मिला ।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥3॥

- कबीर कहते हैं, "गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा, जैसे कुम्हार घड़े को भीतर से सहारा देकर और बाहर से चोट मारकर गढ़ता है, वैसे ही गुरु शिष्य की बुराइयों को दूर कर उसे सही मार्ग पर ले जाते हैं।"

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहना दो म्यान।।4।।

- सज्जन की जाति न पूछ कर उसके ज्ञान को समझना चाहिए । तलवार का मूल्य होता है न कि उसकी मयान का – उसे ढकने वाले खोल का।

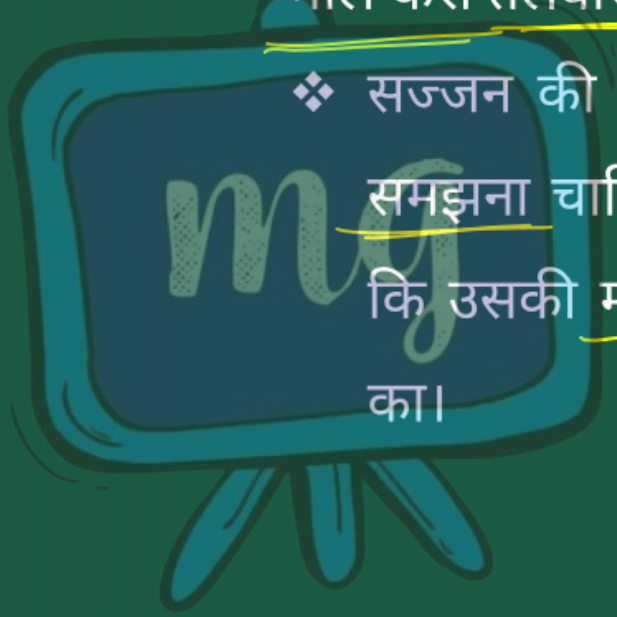

निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।

बिन पानी साबुन बिना, निरमल करै सुभाय॥5॥

❖ इस दोहे में कबीर दास यह समझा रहे हैं कि जो व्यक्ति आपकी निंदा करता है, जो व्यक्ति हर समय आपके भीतर कमियां तलाशता है उसे हमेशा अपने पास रखना चाहिये। क्योंकि एक वही है जो बिना साबुन या बिना पानी के आपके स्वभाव को निर्मल बना सकता है....आपके भीतर की हर कमी को दूर कर सकता है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।6।।

❖ कबीर दास जी कहते हैं कि दुःख के समय सभी भगवान् को याद करते हैं पर सुख में कोई नहीं करता।यदि सुख में भी भगवान् को याद किया जाए तो दुःख हो ही क्यों !

— संत कबीरदास

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



संत कबीरदास

- जन्म – 1398 ई. ।
- स्थान – काशी ।
- आराध्य देवता – निर्गुण-निराकार राम ।
- 'कबीर' शब्द का अर्थ – बड़ा, श्रेष्ठ, महान।
- मृत्यु – 1518 ई. ।
- स्थान – मगहर ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

मूल्यांकन

Under CSR Support by
ipca | Foundation



1 संत कबीरदास आराध्य देवता है निर्गुण-निराकार राम

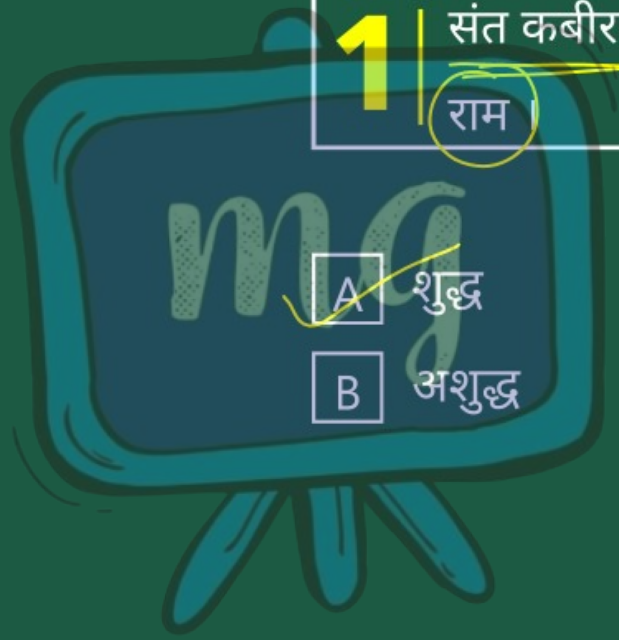

A शुद्ध

B अशुद्ध

मूल्यांकन



2 संत कबीरदास जन्म-~~1399~~ 1398 ई. ।

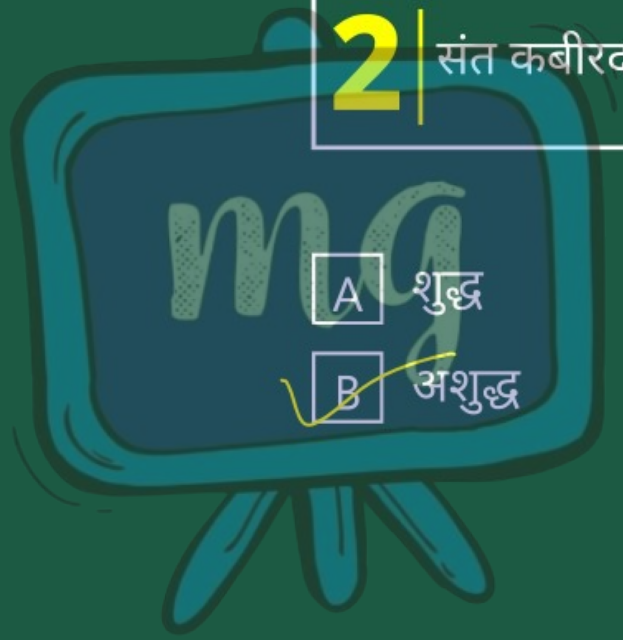

मूल्यांकन



3 | 'कबीर' शब्द का अर्थ बड़ा, श्रेष्ठ, महान।

